द्वितीयः पाठः
सूर्यः एव प्रकृतेः आधारः

किं भवन्तः जानन्ति अस्माकं सृष्टेः आधारः कः? कं परितः एषा पृथिवी नित्यं परिभ्रमति? ननु सूर्यः एव। निराधारा पृथ्वी अन्यथा कथम् आकाशे तिष्ठेत्? कथम् ऋतूनां दिनरात्र्योः च परिवर्तनं भवेत्? वनस्पतीनाम् ओषधीनाम् अपि सूर्यं विना अस्तित्वं समाप्तं भविष्यति। वेदेषु उपनिषत्सु चापि सर्वत्र एव सूर्यस्य महिमा वर्णितः। शिवराजविजयस्य प्रारम्भे अपि सूर्योदयस्य रम्यम् अद्भुतं विज्ञानमयं वर्णनम् उपलभ्यते यत् अत्र वयम् अस्मिन् पाठे पठिष्यामः।

शिवराजविजये निजपर्णकुटीरात् निर्गत्य गुरुसेवनपटुः बटुः उदेष्यन्तं भास्वन्तं प्रणमन् यथा तस्य महिमानं वर्णयति तत्तु निश्चितरूपेण न केवलं ज्ञानवर्धकम् अपितु भाषायाः सौन्दर्यस्य अपि उत्कृष्टम् उदाहरणम्।

शब्दार्थः— **भवन्तः** = आप। **सृष्टेः** = सृष्टि का। **परिभ्रमति** = घूमती है। **नित्यम्** = सदा। **निराधारा** = आधारहीन। **अन्यथा** = नहीं तो। **ओषधीनाम्** = जड़ी-बूटीयों का। **उपनिषत्सु** = उपनिषदों में। **रम्यम्** = सुन्दर। **निज** = अपनी। **पर्ण** = पत्ता। **कुटीर** = कुटिया। **निर्गत्य** = निकलकर। **पटुः** = प्रवीण। **बटुः** = ब्रह्मचारी। **उदेष्यन्तम्** = उदित होते हुए को। **भास्वन्तम्** = सूर्य को। **प्रणमन्** = प्रणाम करता हुआ।

सरलार्थ— क्या आप जानते हो कि हमारी सृष्टि का आधार क्या है? किसके चारों ओर यह पृथ्वी सदा घूमती है? निश्चय से सूर्य ही। नहीं तो आधार-रहित होने पर पृथ्वी आकाश में कैसे टिक सकती है और कैसे ऋतुओं और दिन-रात में परिवर्तन हो सकता है? सूर्य के बिना वनस्पतियों और जड़ी-बूटियों का भी अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। वेदों में और उपनिषदों में भी सर्वत्र ही सूर्य की महत्ता का वर्णन किया गया है। शिवराज विजय के आरम्भ में भी सूर्योदय का सुन्दर, अद्भुत, विज्ञानसंगत वर्णन मिलता है जिसके बारे में हम यहाँ इस पाठ में पढ़ेंगे।

शिवराज विजय में अपनी पत्तों की बनी कुटिया से निकल कर गुरू-सेवा में प्रवीण ब्रह्मचारी उदित हो रहे सूर्य को प्रणाम करता हुआ जिस तरह उसकी महिमा का वर्णन करता है, वह निश्चित रूप से न केवल ज्ञानवर्धक है अपितु भाषा के सौन्दर्य का भी उत्तम उदाहरण है।

अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः। एष भगवान् मणिराकाश –मण्डलस्य चक्रवर्ती खेचरचक्रस्य, कुण्डलम् आखण्डलदिशः, दीपकः ब्रह्माण्डभाण्डस्य, प्रेयान् पुण्डरीकपटलस्य, शोकविमोकः, कोकलोकस्य, अवलम्बो रोलम्बकदम्बस्य, सूत्रधारः सर्वव्यवहारस्य, इनश्च दिनस्य।

शब्दार्थः, पर्यायवाचिशब्दाः टिप्पण्यश्च– अरुणः–रक्तवर्णः, लाल, अरुण (पुं० प्रथमा विभक्तिः, एकवचनम् विशेषणपदम्। **एष**–एषः, यह, एतत् (पुं०), प्रथमाविभक्तिः, एकवचनम्। **प्रकाशः**–ज्योतिः, प्रकाश, प्र० वि०, ए० व०। **पूर्वस्याम्**–पूर्वदिशायाम्, प्राच्याम् दिशि, पूर्व दिशा में, पूर्व (स्त्री०), सप्तमी विभक्ति, एकवचनम्। **भगवतः**–ऐश्वर्य सम्पन्नस्य, भगवत्, षष्ठी विभक्तिः, एकवचनम्, विशेषणम्, भगवान् (ऐश्वर्य सम्पन्न) का। **मरीचिमालिन्**–मरीचमालिन, षष्ठी विभक्ति, एकवचनम्, सूर्यस्य, सूर्य का मरीचिनां किरणानां मालायस्य सः, मरीचिमालिन्, मरीचीमाला + इति। **मणिः**–(संज्ञा), मणिः, पुं०, प्रथमा विभक्तिः, एकवचनम्, द्युतिमत् रत्नम्, चमकता हुआ रत्न। **आकाशमण्डलस्य**–आकाशवृत्तस्य, आकाशस्य, आकाश का, आकाश प्रदेश का। **चक्रवती**–चक्रवर्तिन्, प्र० वि०, ए० व०, सम्राट्, राजचक्रं राजसमूहः यस्य सः। **खेचर-चक्रस्य**–खे चरति इति खेचरम् नक्षत्रम् उपपदतत्पुरुषः, खेचराणाम् चक्रम् समूहः, पष्ठी तत्पुरुषः, नक्षत्रमण्डलस्य, नक्षत्रमण्डल का। **कुण्डलम्** (संज्ञा)–कुण्डल, नपुं०, प्रथमा विभक्तिः, एकवचनम्, कर्णाभूषणम्। **आंखण्डल-दिशः** (संज्ञा)–आखण्डनस्य इन्द्रस्य दिशः, पूर्वदिशः, इन्द्र की दिशा का, पूर्व दिशा का। **दीपकः**–दीपः, दीपयति (जगत्) इति, दीपक। **ब्रह्माण्ड-भाण्डस्य**–ब्रह्माण्डम् एव भाण्डम् तस्य, विश्व-सदनस्य, विश्वरूपी सदन (घर) का। **प्रेयान्**–प्रियतरः, प्रियः। **पुण्डरीक-पटलस्य**–पुण्डरीकाणां पटलम्, षष्ठी तत्पुरुषः, तस्य, कमलसमूहस्य, कमलों के समूह (कुल) का। **शोकविमोकः**–शोकस्य विमोकः, षष्ठी तत्पुरुषः, चिन्ताहरः, शोक-विनाशक, शोक (चिन्ता) को हरनेवाला। **कोकलोकस्य**–कोकानाम् चक्रवाकानाम् लोकस्य समूहस्य, चकवों के समूह का। **अम्बलम्बः**–आश्रयः, सहारा। **रोलम्ब-कदम्बस्य**–रोलम्बानां भ्रमराणां कदम्बस्य समूहस्य, भौंरों के समूह का। **सूत्रधारः**–सूत्रम् धारयति इति, सूत्र को धारण करने वाला। **व्यवस्थापक**–प्रबन्धक। **सर्व-व्यवहारस्य**–सर्वस्य व्यवहारस्य कार्यजातस्य, सब कार्यों का। **इनश्च**–इनः + च, **इनः** (संज्ञा)–इन, पुं०, प्रथमा विभक्तिः, एकवचनम्, स्वामी। **दिनस्य**–दिन का।

प्रसंग– यह गद्यांश पाठ्यपुस्तक के द्वितीय पाठ **'सूर्यः एव प्रकृतेः आधारः'** से लिया गया है। मूलतः इसे विविध उपनिषदों से पं० अम्बिकादत्त व्यास कृत **शिवराजविजयः** नामक गद्यकाव्य से संकलित किया गया है। इसमें भगवान् सूर्य की महिमा का वर्णन है।

भावार्थ– भगवान् आकाश, नक्षत्र, पूर्वदिशा, ब्रह्माण्ड, चक्रवाक-भ्रमर-समूह, व्यवहार तथा दिन के प्राण हैं, ज्योति हैं, जीवन हैं, आनन्द हैं तथा व्यवस्थापक एवं स्वामी हैं।

सरलार्थ– पूर्व दिशा में भगवान् सूर्य का यह लाल प्रकाश है। ये भगवान् (सूर्य) आकाशमण्डल के रत्न हैं, नक्षत्र समूह के सम्राट हैं, इन्द्र की पूर्व दिशा के कर्णाभूषण (कुण्डल) हैं, ब्रह्माण्ड रूपी घर के दीपक हैं, चक्रवों के समूह के प्रिय हैं, भौंरों के समूह के आश्रय हैं। सब व्यवहारों के व्यवस्थापक हैं तथा दिन के स्वामी हैं।

अयमेव अहोरात्रं जनयति। अयम् एव वत्सरं द्वादशसु भागेषु विभनक्ति। अयम् एव कारणं षण्णाम् ऋतूनाम्। एष एव अङ्गीकरोति उत्तरं दक्षिणं चायनम्। अनेन एव सम्पादिताः युगभेदाः। अनेन एव कृताः कल्पभेदाः। एनम् एव आश्रित्य भवति परमेष्ठिनः परार्द्धसङ्ख्या। वेदा एतस्य एव वन्दिनः। गायत्री अमुम् एव गायति। धन्य एष कुलमूलं श्रीरामचन्द्रस्य। प्रणम्यः एषः विश्वेषाम्।

शब्दार्थः, पर्यायवाचिशब्दाः टिप्पण्यश्च– अहोरात्रम्–अहः च रात्रिः च; समाहार द्वन्द्व समासः दिनं च निशाच तम् तयोः समाहारः दिन-रात को। **जनयति**–√जन्, णिच्, लट्, प्र० पु०, ए० व०, उत्पादयति, उत्पन्न करता है। **वत्सरम्**–वर्षम्, वर्ष को। **द्वादशसु**–द्वादश-भागेषु, बारह (भागों) में। बारह महीनों में, द्वादश मासेषु। **विभनक्ति**–√वि, भज्, लट्, प्र० पु०, ए० व०, विभाजयति, विभक्त करता है, विभजते। **कारणम्**–हेतुः, निमित्तम्, कारण। **षण्णाम्**–षट् सङ्ख्यात्मकानां छह संख्या वाली ऋतुओं) का। **ऋतूनां**–ऋतु, षष्ठी, बहुवचनम्–वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर, प्रत्येक ऋतु दो-दो मास तक रहती है। पृथ्वी की सूर्य के चारों ओर गति से इनका निर्माण होता है। पृथ्वी का अपने गिर्द घूमने से दिन-रात का निर्माण होता है। कोणार्क के सूर्य मन्दिर में एक विशाल सूर्य के रथ के माध्यम से इसको स्पष्ट किया गया है। **अङ्गीकरोति**–अङ्ग च्वि कृ, लट्, लकार, प्रथम पुरुषः, एकवचनम्, स्वीकरोति, स्वीकार करता है। **उत्तरम् अयनम्**–उत्तरायणम्, मकर संक्रान्ति से कर्क संक्रान्ति तक छह मासों तक का काल उत्तरायण कहलाता है। इसमें दिन अपेक्षाकृत बड़े होते हैं तथा रातें छोटी होती हैं, **दक्षिणम् अयनम्**–दक्षिणायनम्,

कर्क संक्रान्ति में मकर संक्रान्ति का छह मास का काल दक्षिणायन कहलाता है। इसमें दिन छोटे होते हैं और रात्रि बड़ी होती है। इन दोनों के उत्तरायण के काल को श्रेष्ठ माना जाता है। हर एक अयन में तीन-तीन ऋतुएँ होती हैं। अनेन-अनेक सूर्येण, इस सूर्य के द्वारा। **युगभेदाः**—सत्युग, द्वापर, त्रेता तथा कलियुग—ये चार युग भी सूर्य की अन्य ग्रहों के गिर्द गति के परिणाम से बनते हैं। **सम्पादिताः**—सम् + पद् + णिच, क्त, पुं० प्रथमा वि०, बहुवचनम् रचिताः, बनाए गए हैं। **कृता**—कृ + क्त। **कल्पभेदाः**—कल्पों के भेद अनादि सृष्टि में, सर्ग, प्रतिसर्ग की परम्परा से विविध कल्पों का निर्माण भी सूर्य की कृपा से होता है। **परमेष्ठिनः**—परमेष्ठिन्, षष्ठी विभक्तिः, एकवचनम्। ब्राह्मण, विधातुः, ब्रह्मा को विधाता की। **परार्द्ध-सङ्ख्या**—परार्द्धा सङ्ख्या, कर्मधारय समास, अन्तिमा परार्द्धनामा सङ्ख्या, गिनती में सबसे अन्तिम सङ्ख्या। एक के साथ सत्रह बिन्दु लगाकर परार्द्ध सङ्ख्या बनती है। सङ्कल्प पाठ का आरम्भ ब्रह्मणः परार्द्धे (ब्रह्म की परार्द्ध सङ्ख्या) से होता है। **वेदाः**—चतुर्वेदाः, चारों वेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा सामवेद। **अस्य**—सूर्यस्य, इस सूर्य की। **वन्दिनः**—स्तोतम्ः, स्तुति करने वाले। **गायत्री**—गायत्री मन्त्रः गायत्री मन्त्र, यह सवितृदेव की स्तुति में गाया जाता है। सवितृदेव भी सूर्य ही है। **अमुम्**—एनम्, इसको। **गायति**—गै, लट्, लकार, प्र० पु०, ए० व०। **धन्यः**—स्तुत्यः, स्तुति के योग्य। **कुलमूलम्**—कुलस्य आधारः अधिष्ठातृदेवः, भगवान् राम सूर्यवंशी थे। सूर्य से ही उनकी वंश परंपरा आरंभ होती है। **प्रणम्यः**—प्रणाम-योग्यः, प्रणमनीयः, प्रणाम के योग्य। **विश्वेषाम्**—सर्वेषाम् सत्त्व के द्वारा। सबको भगवान् सूर्य को अवश्य प्रणाम करना चाहिए।

प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश पाठ्यपुस्तक के द्वितीय पाठ 'सूर्यः एव प्रकृतेः आधारः' से लिया गया है। मूलतः इसे विविध उपनिषदों से पण्डित अम्बिकादत्त व्यास कृत गद्यकाव्य 'शिवराजविजयः' से लिया गया है। इसमें भगवान् सूर्य के विविध कार्य-कलापों का वर्णन है। वैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से इसका विशेष महत्व है। सूर्य के उपासक प्रातः काल इसके माध्यम से सूर्य की स्तुति करते हैं।

सरलार्थ— यह (सूर्य) ही दिन-रात को पैदा करता है। यह ही वर्ष को बारह भागों में बाँटता है। यह ही छः ऋतुओं का कारण है। यह ही दक्षिण और उत्तर इन दो अपनों को स्वीकार करता है। इसके द्वारा ही युगों के भेदों का सृजन किया गया है। इससे ही कल्पभेदों की रचना हुई है। इसी पर आश्रित होकर ब्रह्मा जी की परायी सङ्ख्या होती है। वेद इसकी वन्दना करने वाले हैं। गायत्री इसी का गान करती है। धन्य है यह श्रीरामचन्द्र जी के कुल का आधार। यह सबके द्वारा प्रणाम योग्य है।

अनुप्रयुक्त-व्याकरणम्

पाठाधारिताः सन्धिविच्छेदाः

अरुण एषः	=	अरुणः + एषः	**एष प्रकाशः**	=	एषः + प्रकाशः
भगवतो मरीचिमालिनः	=	भगवतः + मरीचिमालिनः	**एष भगवान्**	=	एषः + भगवान्
मणिराकाशमण्डलस्य	=	मणिः + आकाशमण्डलस्य	**अवलम्बो-**		अवलम्बः
इनश्च	=	इनः + च	**रोलम्बकदम्बस्य**	=	+ रोलम्बकदम्बस्य
अहोरात्रम्	=	अहः + रात्रम्	**अयमेव**	=	अयम् + एव
चायनम्	=	च + अश्पम्	**परार्द्धसड्.ख्या**	=	पर + अर्द्धसड्.ख्या
सड्,ख्या	=	सम् + ख्या			

पाठाधारिताः समासविग्रहाः

समस्तपदानि	**विग्रहाः**	**समास-नाम**
आकाशमण्डलस्य	आकाशस्य मण्डलम्, तस्य	षष्ठी तत्पुरुषः
	आकाशः एव मण्डलम्, तस्य	कर्मधारयः
खेचरचक्रस्य	खे चरः	अलुक् तत्पुरुषः
	खेचरणां चक्रम्, तस्य	षष्ठी तत्पुरुषः
आखण्डलदिशः	आखण्डलस्य दिक्, तस्याः	षष्ठी तत्पुरुषः
ब्रह्माण्डभाण्डस्य	ब्रह्माण्डम् एव भाण्डम्, तस्य	कर्मधारयः

पुण्डरीकपटलस्य	पुण्डरीकाणाम् पटलम, तस्य	षष्ठी तत्पुरुषः
शोकविमोकः	शोकस्य विमोकः	षष्ठी तत्पुरुषः
कोकलोकस्य	कोकनाम् लोकः, तस्य	षष्ठी तत्पुरुषः
रोलम्बकदम्बस्य	रोलम्बानाम् कदम्बः, तस्य	षष्ठी तत्पुरुषः
सर्वव्यवहारस्य	सर्वः व्यवहारः, तस्य	कर्मधारयः
	सर्वेषां व्यवहारः, तस्य	षष्ठी तत्पुरुषः
अहोरात्रम्	अहः च रात्रिः च अनयोः समाहारः	द्वन्द्वः
युगभेदाः	युगानाम् भेदाः	षष्ठी तत्पुरुषः
कल्पभेदाः	कल्पानाम् भेदाः	षष्ठी तत्पुरुषः
परार्द्धसंख्या	परार्द्धा संख्या	कर्मधारयः
कुलमूलम्	कुलस्य मूलम्	षष्ठी तत्पुरुषः

अनुप्रयोगस्य प्रश्नोत्तराणि

प्रश्न 1. अधोलिखितशब्दानां स्थाने पाठे ये शब्दाः प्रयुक्ताः तेषां मेलनं कुरुत—

'अ' स्तम्भः शब्दाः	'ब' स्तम्भः पाठे प्रयुक्ताः शब्दाः		
(*i*) सूर्यस्य	(क) खे	(*vii*) स्वामी	(छ) आखण्डलः
(*ii*) आकाशे	(ख) विश्वेषाम्	(*viii*) दिनम्	(ज) इनः
(*iii*) इन्द्रः	(ग) वन्दिनः	(*ix*) ब्राह्मणः	(झ) रोलम्बः
(*iv*) कमलम्	(घ) कोकः	(*x*) स्तुतिगायकाः	(ञ) परमेष्ठिनः
(*v*) चक्रवाकः	(ङ) मरीचिमालिनः	(*xi*) सर्वेषाम्	(ट) पुण्डरीकम्
(*vi*) भ्रमरः	(च) अहः		

उत्तरम्—

'अ' स्तम्भः	'ब' स्तम्भः		
(*i*) सूर्यस्य	(ङ) मरीचिमालिनः	(*vii*) स्वामी	(ज) इनः
(*ii*) आकाशे	(क) खे	(*viii*) दिनम्	(च) अहः
(*iii*) इन्द्रः	(छ) आखण्डलः	(*ix*) ब्राह्मणः	(ञ) परमेष्ठिनः
(*iv*) कमलम्	(ट) पुण्डरीकम्	(*x*) स्तुतिगायकाः	(ग) वन्दिनः
(*v*) चक्रवाकः	(घ) कोकः	(*xi*) सर्वेषाम्	(ख) विश्वेषाम्
(*vi*) भ्रमरः	(झ) रोलम्बः		

प्रश्न 2. कोष्ठकात् शुद्धम् उत्तरं चित्वा लिखत—

(*i*) भगवतः मरीचिमालिनः उदयः कस्यां दिशायां भवति?.................... (पूर्वस्याम्/उत्तरस्याम्/पश्चिमदिशायाम्)

(*ii*) सूर्यः वर्षं कतिभागेषु विभजते?........................ (चतुर्भागेषु/द्वयोः भागयोः/द्वादशभागेषु)

(*iii*) अहोरात्रं कः जनयति?............................ (ब्रह्मा/सूर्यः/चन्द्रमा)

(*iv*) 'आदित्यो ह वै प्राणः' इति कस्मिन् उपनिषदि वर्णितम्?..................... (तैत्तिरीये/छान्दोग्ये/प्रश्ने)

(*v*) सूर्यः केषाम् आत्मा?......................... (जडवस्बुनाम्/चेतनानाम्/जड़चेतनानाम्)

उत्तरम्— (*i*) पूर्वस्याम् (*ii*) द्वादशभागेषु (*iii*) सूर्यः
(*iv*) तैत्तिरीये (*v*) जड़चेतनानाम्

प्रश्न 3. अधोलिखितानि पदानि कस्य पदस्य पर्यायवाचिनः इति पाठात् चित्वा कोष्ठके लिखत—

यथा— (*i*) रवि, भानुः, दिवाकरः (सूर्यस्य)

(*ii*) निशा, शर्वरी, रजनी (............)

(*iii*) प्रजापतिः, विधाता, स्रष्टा (............)

(*iv*) सञ्चालकः, नियामकः, संयोजकः (............)

(*v*) करः, किरणः, रश्मिः (............)

(*vi*) मधुपः, द्विरेफः, भ्रमरः (............)

(*vii*) वन्द्यः, स्तुत्यः, प्रशंस्यः (............)

(*viii*) आश्रयः, आधारः, धारकः (............)

उत्तरम्— (*ii*) रात्रिः (*iii*) परमेष्ठिन् (*iv*) सूत्रधारः

(*v*) मरीचिः (*vi*) प्रणम्यः (*vii*) अवलम्बः

(*viii*) जड़चेतनानाम्

प्रश्न 4. विशेषणानि विशेष्यैः सह मेलयत—

विशेषणानि	विशेष्याणि		
(*i*) भगवतः	(क) बटुः	(*v*) दक्षिणम्	(ङ) सूर्यः
(*ii*) षण्णाम्	(ख) भास्वन्तम्	(*vi*) सर्वे	(च) ऋतूनाम्
(*iii*) शतधा	(ग) लोकाः	(*vii*) सहस्ररश्मिः	(ङ) वर्तमानः
(*iv*) गुरुसेवनपटुः	(घ) मरीचिमालिनः	(*viii*) उदेष्यन्तं	(च) अयनम्

उत्तरम्—

विशेषणानि	विशेष्याणि		
(*i*) भगवतः	(घ) मरीचिमालिनः	(*v*) दक्षिणम्	(च) अयनम्
(*ii*) षण्णाम्	(च) ऋतूनाम्	(*vi*) सर्वे	(ग) लोकाः
(*iii*) शतधा	(ङ) वर्तमानः	(*vii*) सहस्ररश्मिः	(ङ) सूर्यः
(*iv*) गुरुसेवनपटुः	(क) बटुः	(*viii*) उदेष्यन्तं	(ख) भास्वन्तम्

प्रश्न 5. समस्तपदानि रचयत—

समासविग्रहाः	समस्तपदानि
(*i*) मरीचीनां माला यस्य अस्ति इति तस्य	....
(*ii*) खे चरन्ति इति खेचराः, खेचराणां चक्रं तस्य	....
(*iii*) ब्रह्माण्डम् एव भाण्डं, तस्य	....
(*iv*) पुण्डरीकाणां पटलस्य	....
(*v*) रोलम्बानां कदम्बः, तस्य	....
(*vi*) अहः च रात्रिः च तम्	....
(*vii*) कल्पानां भेदाः	....
(*viii*) पर्णानां कुटीरम्, तस्मात्	....

उत्तरम्— (*i*) मरीचिमालिनः (*ii*) खेचरचक्रस्य (*iii*) ब्रह्माण्डभाण्डस्य

(*iv*) पुण्डरीकपटलस्य (*v*) रोलम्बकदम्बस्य (*vi*) अहोरात्रम्

(*vii*) कल्पभेदा (*viii*) पर्णकुटीरात्

प्रश्न 6. समानध्वन्यात्मकशन्दान् मेलयत–

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
(i) ब्रह्माण्डम्	(क) कदम्बः
(ii) कुण्डलम्	(ख) दिनम्
(iii) शोकः	(ग) खेचरचक्रस्य
(iv) रोलम्बः	(घ) भाण्डम्
(v) इनः	(ङ) आखण्डलः
(vi) कोकः	(च) विमोकः
(vii) चक्रवर्ती	(छ) गायति
(viii) गायत्री	(ज) लोकः

उत्तरम्–

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
(i) ब्रह्माण्डम्	(घ) भाण्डम्
(ii) कुण्डलम्	(ङ) आखण्डलः
(iii) शोकः	(च) विमोकः
(iv) रोलम्बः	(क) कदम्बः
(v) इनः	(ख) दिनम्
(vi) कोकः	(ज) लोकः
(vii) चक्रवर्ती	(ग) खेचरचक्रस्य
(viii) गायत्री	(छ) गायति

प्रश्न 7. अधोलिखितवाक्येषु क्रियापदानि योजयत–

(i) अयमेव अहोरात्रम्.................।

(ii) एष एव उत्तरं दक्षिणं च अयनम्.................।

(iii) परमेष्ठिनः परार्द्धसंख्या एनम् एव आश्रित्य.................।

(iv) प्रजानां प्राणः एषः सूर्यः.................।

(v) सूर्यः वत्सरं द्वादशसु भागेषु.................।

उत्तरम्– (i) अयमेव अहोरात्रम **जनयति**।

(ii) एष एव उत्तरं दक्षिणं च अयनम् **अङ्गी करोति**।

(iii) परमेष्ठिनः परार्द्धसंख्या एनम् एव आश्रित्य **भवति**।

(iv) प्रजानां प्राणः एषः सूर्यः **प्रकाशते**।

(v) सूर्यः वत्सरं द्वादशसुभागेषु **विभनक्ति**।

प्रश्न 8. शब्दानां मूलशब्दं विभक्तिं च प्रदर्श्य तालिकां पूरयत–

यथा–	भगवतः	भगवत्	षष्ठी	एकवचनम्
	(i) मरीचिमालिनः	मरीचिमालिन्	.......(1)......	.......(2)......
	(ii) चक्रवर्ती	.......(3)......	प्रथमा	एकवचनम्
	(iii) दिशः	दिश्	.......(4)......	एकवचनम्
	(iv) प्रेयान्	प्रेयस्	.......(5)......	.......(6)......
	(v) षण्णाम्	षड्	.......(7)......	.......(8)......
	(vi) परमेष्ठिनः	.......(9)......	षष्ठी	एकवचनम्
	(vii) वन्दिनः	.......(10)......	प्रथमा	बहुवचनम्

(viii) अमुम्	अदस्	.......(11)......	.......(12)......
(ix) विश्वेषाम्	.......(13)......	षष्ठी	बहुवचनम्
(x) पूर्वस्याम्	पूर्व	.......(14)......	.......(15)......

उत्तरम्—
(i) (1) षष्ठी (2) एकवचनम्
(ii) (3) चक्रवर्तिन्
(iii) (4) षष्ठी
(iv) (5) प्रथमा (6) एकवचनम्
(v) (7) षष्ठी (8) बहुवचनम्
(vi) (9) परमेष्ठिन्
(vii) (10) वन्दिन्
(viii) (11) द्वितीया (12) एकवचनम्
(ix) (13) विश्व
(x) (14) सप्तमी (15) एकवचनम्

प्रश्न 9. सन्धि कृत्वा लिखत—

(i) भगवतः + मरीचिमालिनः = ...
(ii) मणिः + आकाशमण्डलस्य = ...
(iii) अवलम्बः + रोलम्बकदम्बस्य = ...
(iv) इनः + च = ...
(v) च + अयनम् = ...
(vi) परम् + इष्ठिन् = ...

उत्तरम्— (i) भगवतो मरीचिमालिनः (ii) मणिराकाशमण्डलस्य (iii) अवलम्बो रोलम्बकदम्बस्य
(iv) इनश्च (v) चायनम् (vi) परमेष्ठिन्

प्रश्न 10. अधोलिखितवाक्येषु अव्ययपदानि योजयत—

(i) सूर्यः............आत्मा जगतः तस्थुषः च।
(ii) इनः......................दिनस्य।
(iii) सूर्यस्य वर्णनं............केवलं ज्ञानवर्धकम्...........भाषायाः सौन्दर्यस्य उत्कृष्टम् उदाहरणम्।
(iv) अयम्.............कारणं षण्णाम् ऋतूनाम्।
(v) निजपर्णकुटीरात्.............बटुः सूर्यस्य महिमानं वर्णयति।

उत्तरम्— (i) सूर्यः **एव** आत्मा जगतः तस्थुषः च।
(ii) इनः **च** दिनस्य।
(iii) सूर्यस्य वर्णनम् **न** केवलं ज्ञानवर्धकम् **अपितु** भाषायाः सौन्दर्यस्य उत्कृष्टम् उदाहरणम्।
(iv) अयम् **एव** कारणं षण्णाम् ऋतूनाम्।
(v) निजपर्णकुटीरात् **निर्गत्य** बटुः सूर्यस्य महिमानं वर्णयति।

पाठविकासः

क. लेखकस्य ग्रन्थस्य च परिचयः

अयं पाठः विविधेभ्यः उपनिषद्भ्यः अपि च 'शिवराजविजय' नाम्नः गद्यकाव्यस्य प्रथमाध्यायात् सङ्कलितः सम्पादितः च अस्ति। शिवराजविजयस्य रचयिता श्री अम्बिकादत्तव्यासः अस्ति। श्री अम्बिकादत्तव्यासः आधुनिकयुगस्य ऐतिहासिक-उपन्यासलेखनविधायाः प्रवर्तकोऽस्ति।

(क) लेखक व ग्रंथ का परिचय

यह पाठ विविध उपनिषदों से तथा शिवराजविजय नामक गद्यकाव्य के प्रथम अध्याय से संकलित व संपादित किया गया है। शिवराजविजय के रचयिता श्री अंबिकादत्त व्यास हैं। श्री अंबिकादत्त व्यास आधुनिक युग के ऐतिहासिक उपन्यास लेखन की विधा के प्रवर्तक हैं।

ख. भावविकासः

सूर्यः एव आत्माः जगतः तस्थुषश्च इति ऋग्वेदे वर्णितम्। छान्दोग्य-उपनिषदि कथितम्-आदित्यो ह वै प्राणः। तैत्तिरीय-उपनिषद् सूचयति-आदित्येन वाव सर्वे लोकाः महीयन्ते। प्रश्नोपनिषदि अपि लिखितम् यत् सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः प्राणः प्रजानाम् उदयति एषः सूर्यः इति।

(i) नवो नवो भवसि जायमानः। अथर्व 7/81/2.

(ii) कः शक्तः सूर्यं हस्तेनाच्छादयितुम। भासः - अविमारक

(iii) आनन्दमयो ज्ञानमयो विज्ञानमय आदित्यः। सूर्योपनिषद्

(iv) सहस्त्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।। कालिदासः-अभिज्ञानशाकुन्तलम् 1/18.

(v) एकः श्लाघ्यः विवस्वान् परहितकरणायैव यस्य प्रयासः। हर्ष-नागानन्द 3/18.

(ख) भाव विकास

सूर्य ही गतिशील जङ्गम व स्थायी (स्थावर) की आत्मा है। ऐसा ऋग्वेद में वर्णन है। **छान्दोग्य उपनिषद्** में कहा गया है—

आदित्यो ह वै प्राणः (सर्यू ही प्राण है) **तैत्तिरीय उपनिषद्** की सूचना है—

आदित्येन वाव सर्वे लोकाः महीयन्ते (सूर्य से ही सब लोक महत्व को प्राप्त करते हैं) प्रश्नोपनिषद् में भी लिखा गया है कि जो हजार किरणों वाला सौ प्रकार से प्रजाओं में विद्यमानप्राण का उदय होता है, यह सूर्य ही है—

(i) नवो नवो भवसि जायमानः। (उत्पन्न होते हुए बार-बार नए होते हो) —अथर्व 7/81/2.

(ii) कः शक्तः सूर्यं हस्तेनाच्छादयितुम। (सूर्य को कौन हाथ से ढक सकता है?) भासकृत—अविमारक

(iii) आनन्दमयो ज्ञानमयो विज्ञानमय आदित्यः। (सूर्य आनंदमय, ज्ञानमय के साथ विज्ञानमय भी है।)—सूर्योपनिषद्

(iv) सहस्त्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।। (सूर्य हजार गुणा करके छोड़ने के लिए जल (रस), ग्रहण करता है।) —अभिज्ञानशाकुन्तलम् 1/18.

(v) एकः श्लाघ्यः विवस्वान् परहितकरणायैव यस्य प्रयासः। (एक प्रशंसायोग्य सूर्य है जिसका प्रयत्न सदा दूसरो का हित करना है।) हर्ष—नागानन्द 3/18.

सूर्याष्टकम्

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते।। 1.

सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम्
श्वेतपद्मधरं देवं तं सूर्य प्रणमाम्यहम्।। 2.

बृहितं तेजः पुञ्जं च वायुमाकाशमेव च।
प्रभु च सर्वलोकानां तं सूर्य प्रणमाम्यहम्।। 5.

बन्धूकपुष्पसङ्काशं हारकुण्डलभूषितम्
एकचक्रधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम्।। 6.

अर्थ—हे आदिदेव सूर्य (भास्कर) तुम्हें मेरा प्रणाम! आप कृपा करें। हे दिन को बनाने वाले तुम्हें प्रणाम, हे प्रकाश देने वाले, तुम्हें प्रणाम। सात घोड़े के रथ पर चढ़े हुए, तीक्ष्ण, कश्यप के पुत्र, हे सफेद काम को धारण करने वाले सूर्यदेव, मैं आपको प्रणाम करता हूँ। महत् तेजः पुञ्ज, वायु तथा आकाशरूप, तथा सब लोकों के स्वामी, आपको प्रणाम। गुडहल के फूल के समान, हार तथा कुंडल से सुभूषित, एकचक्र को धारण करने वाले देव सूर्य को मैं प्रणाम करता हूँ।

भावाववबोधनम्

जगतः तस्थुषश्च	=	ये चेतनाः जीवाः, ये च अचेतनाः, तेषां सर्वेषाम् एव आत्मा।
चक्रवर्ती खेचरचक्रस्य	=	सर्वेषां नक्षत्रगणानां .'सम्राट्' इति सूर्येण एव सर्वाणि नक्षत्राणि प्रकाशितानि भवन्ति, सूर्यं परितः एव सर्वाणि नक्षत्राणि परिभ्रमन्ति।
कुण्डलम् आखण्डलदिशः	=	इन्द्रसम्बन्धिनी प्राची दिशा नायिका अस्ति, तस्याः कर्णाभूषणम् इव कुण्डलं सूर्यः विराजते।
शोकविमोकः कोकलोकस्य	=	चक्रवाकः इति पक्षी रात्रौ स्वपत्न्याः वियुक्तः भवति। प्रातः तयोः मेलनं भवति। प्रातःकालस्य जनकः सूर्यः तयोः शोकं दूरी करोति।
अवलम्बः रोलम्बकदम्बस्य	=	भ्रमराः रात्रौ कमल-पुष्पेषु रुद्धाः भवन्ति। प्रातः यदा कमलानि विकसन्ति, सूर्यः कमलेभ्यः तान् मोचयित्वा पुनः जीवनदानं यच्छति।
कुलमूलं श्रीरामचन्द्रस्य	=	सूर्यः एव भगवतः श्रीरामचन्द्रस्य कुलस्य जनकः मन्यते। एतस्मात् एव श्रीरामः सूर्यवंशी उच्यते।
(i) वत्सर-द्वादशभागाः	—	चैत्रः, वैशाखः, ज्येष्ठः, आषाढ़ः, श्रावणः, भाद्रपदः, आश्विनः, कार्तिकः, मार्गशीर्षः, पौषः, माघः, फाल्गुनः।
(ii) षड् ऋतवः	—	वसन्तः, ग्रीष्मः, वर्षा, शरत्, हेमन्तः, शिशिरः च
(iii) अयनम् (सूर्यमार्गः)	—	उत्तरायणम्, दक्षिणायनम्
(iv) युगानि (चत्वारि)	—	कृतं, त्रेता, द्वापरं कलिश्चेति चतुर्युगम् (विष्णुपुराणम्)
(v) कल्पभेदाः	—	कल्पः च एकसप्ततिमहायुगात्मकः ख्यातः कालविदाम् (अमरकोषः)
(vi) परार्द्धसङ्ख्या	—	1,000,000,000,000,000,00/इति सङ्ख्या

भाव-अवबोधनम्—

जगतः तस्थुषश्च—जो चेतन जीव हैं तथा जो अचेतन (जड़) हैं, सूर्य उन सबकी आत्मा है।

चक्रवर्ती खेचरचक्रस्य—सब नक्षत्र समूहों का सम्राट् भी सूर्य ही है क्योंकि सूर्य से ही सब नक्षत्र प्रकाशित होते हैं।

कुण्डलम् आखण्डलदिशः—इंद्र से संबंधित पूर्व दिशा नायिका है उसके कर्णाभूषण कुंडल के समान सूर्य शोभा देता है।

शोकविमोकः कोकलोकस्य—चकवा पक्षी रात को अपनी पत्नी से अलग हो जाता है। प्रातः उन दोनों का मेल होता है। प्रातःकाल का जनक सूर्य उन दोनों के शोक को दूर करता है।

अवलम्बः रोलम्बकदम्बस्य—भौंरें रात में कमल के फूलों में बंद हो जाते हैं। सवेरे जब कमल खिलते हैं, सूर्य कमलों से उन्हें मुक्त कर पुनः जीवनदान देता है।

कुलमूलं श्रीरामचन्द्रस्य—सूर्य ही भगवान् श्रीराम के कुल का जनक है। इसी कारण श्रीराम सूर्यवंशी कहलाते हैं।

सूर्यकृतभेदविवरणम्	
(क) वत्सर-द्वादशमासाः (द्वादशभागाः)	चैत्रः वैशाखः, ज्येष्ठः, आषाढ़ः, श्रावणः, भाद्रपदः, आश्विनः, कार्तिकः, मार्गशीर्षः, पौषः, माघः, फाल्गुनः।
(ख) षड् ऋतवः (षड्भागाः)	वसन्तः, ग्रीष्मः, वर्षा, शरत्, हेमन्तः, शिशिरः।
(ग) अयनम् (अयनद्वयम्)	उत्तरायणम्, दक्षिणायनम्
युगानि (चत्वारि)	कृतं, त्रेता, द्वापरम्, कलिः।
कल्पः 71 महायुगानि	+ 14 मन्वनतराणि
ब्रह्मणः परार्द्ध-सङ्ख्या	1,000, 000, 000, 000, 000, 00

प्रदत्तसङ्केतैः अधोलिखितां प्रहेलिकां पूरयत –

1. व	X	2. द्	X	X	3. फा	4. चै	5. व	X	6. आ	षा	ढे
स	X	वा	7. भा	X	ल्	त्रा	र्षा	X	श	X	X
न्	X	प	द्र	X	गु	त्	या	8. श्रा	वि	णे	X
तः	X	रे	प	X	ने	X	म्	का	ने	X	X
9. कृ	ते	X	दः	10. ज्	X	X	X	11. र्त्ति	X	X	X
12. हे	म	न्	तः	ये	X	X	X	क	13. श	र	दः
X	X	X	14. ग्री	ष्	मे	X	X	स्	X	15. क	लिः
16. वै	शा	खे	X	ठः	X	17. त्रे	ता	य	18. द	19. पौ	षः
20. मा	घ	स्	य	X	X	X	X	X	क्षि	X	X
र्ग	X	X	X	X	X	X	X	X	णा	X	X
शी	X	X	X	X	X	21. उ	त्त	रा	य	णे	X
र्षः	X	X	X	X	X	X	X	X	न	X	X
X	X	X	X	X	22. अ	हो	रा	त्र	मू	X	X

संङ्केताः

वामतः दक्षिणम् (वर्णसङ्ख्या) — **उत्तराणि**

7. शप्तः यक्षः अस्मिन् मासे मेघम् अपश्यत्।........................ भाद्रपदः
8. वेदाध्ययनम् अस्मिन् मासे स्थगितं भवति।........................ श्राविणे
9. मान्धाता महीपतिः अस्मिन् युगे अभवत्।........................ कृते
12. अस्य ऋतोः आदौ 'हे' भवति।........................ हेमन्तः
13. अस्य मासस्य पूर्णिमायां चन्द्रमसः करेभ्यः अमृतवर्षणं भवति। (3)........................ आश्विने
14. अस्मिन् ऋतौ तापतप्ताः जनाः पर्वतीयस्थलेषु गच्छन्ति। (3)........................ ग्रीष्मे
15. कृष्णे दिवं प्रयाते एष युगः प्रारब्धः (2)........................ कलिः
16. विशाखानक्षत्रम् अस्मिन् मासे भवति। (3)........................ वैशाखे
17 रामः अस्मिन् युगे जातः। (2)........................ त्रेता
19. माघमासात् पूर्वं भवति अयं मासः (2)........................ पौषः
20. शिशुपालवधस्य लेखकस्य नाम अपि अस्य मासस्य नाम्ना सदृशः। (2)........................ माघस्य
21. भीष्मः अस्मिन् अयने प्राणान् अत्यजत्। (6)........................ उत्तरायण
22. दिनञ्च रात्रिश्च। (5)........................ अहोरात्रम्

उपरिष्टात् अधः (वर्णसङ्ख्या)

1. हेमन्तात् पश्चात् अयं ऋतुः भवति।........................ वसन्तः
2. अस्मिन् युगे कृष्णस्य जन्म अभवत्।........................ द्वापरे
3. अस्मिन् मासे होलिकोत्सवः भवति।........................ फाल्गुने
4. विक्रमाबदस्य प्रारम्भः अस्मात् मासात् भवति। (2)........................ चैत्रात्
5. अस्मिन् ऋतौ मेघान् दृष्ट्वा मयूराः नृत्यन्ति, नद्यः वेगेन वहन्ति।(2)........................ वर्षायाम्
6. अस्मिन् मासे रावणं हत्वा रामः विजयी अभवत्। (4)........................ आश्विने

10. वैशाखादनन्तरम् एष मासः भवति। (4) .... ज्येष्ठः
11. अस्य मासस्य अमावस्यायां दीपावलिः मान्यते। (4).. कार्तिकस्य
18. उत्तरायणदनन्तरम् एतत् अयनम् आगच्छति। (6).. दक्षिणायनम्
20. मृगशिरो नक्षत्रात् सम्बद्धः अयं मासः। (4) मार्गशीर्षः

पदानुशीलनी

शब्दार्थाः

मरीचिमालिनः (सं.)	=	(मरीचिमालिन्, षष्ठी विभक्तिः, एकवचनम्) सूर्यस्य; सूर्य का; of the sun.
मणिः (सं.)	=	(मणिः, पुं., प्रथमा विभक्तिः एकवचनम्) द्युतिमतरत्नम्; चमकती हुई मणि; shining jewel.
खेचरचक्रस्य (सं.)	=	(खे चरति इति खेचरम् (नक्षत्रम्) उपपदतत्पुरुषः, खेचराणां च क्रम इति खेचरचक्रम्, षष्ठीतत्पुरुषः तस्य) नक्षत्र-मण्डलस्य; नक्षत्र मण्डल का; of the configuration of planets.
कुण्डलम् (सं.)	=	(कुण्डल, नपुं, प्रथमा विभक्तिः, एकवचनम्) कुण्डलम्, कर्णाभूषणम्; कुण्डल; ring type ear-ornament.
आखण्डलदिशः (सं.)	=	(आखण्डलस्य दिशः, षष्ठीतत्पुरुषः) इन्द्रस्य दिशः, पूर्वदिशः; इन्द्र की दिशा का, पूर्व दिशा का; of the east direction.
ब्रह्माण्डभाण्डस्य (सं.)	=	(ब्रह्माण्डम् एव माण्डं तस्य कर्म०) विश्वसदनस्य; विश्व रूपी सदन का; of the abode like universe.
पुण्डरीकपटलस्य (सं.)	=	(पुण्डरीकाणां पटलम्, षष्ठीतत्पुरुषः तस्य) कमलसमूहस्य; कमलकुल का; of the group of lotuses.
शोकविमोकः (सं.)	=	(शोकस्य विमोकः, षष्ठीतत्पुरुषः) चिन्ताहरः, शोकविनाशकः; शोक को दूर करने वाला; remover of the grief.
कोकलोकस्य (सं.)	=	(कोकानां लोकस्य, षष्ठीतत्पुरुषः) चक्रवाकसमूहस्य; चकवों के समूह का; of the group of ruddy geese.
इनः (सं.)	=	(इन, पुं., प्रथमा विभक्तिः, एकवचनम्) स्वामी; स्वामी; Lord.
रोलम्बकदम्बस्य (सं.)	=	(रोलम्बानां कदम्बस्य, षष्ठीतत्पुरुषः) भ्रमराणां समूहस्य; भौरों के समूह का; of the group of bees.
विभनक्ति (क्रि.)	=	(वि भज् लट् लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्) विभजते; विभक्त करता है; divides.
अङ्गीकरोति (क्रि.)	=	(अङ्ग च्वि कृ लट् लकारः, प्रथमपुरुषः एकवचनम्,) स्वीकरोति; स्वीकार करता है; accepts.
सम्पादिताः (वि.)	=	(सम् पद् णिच् क्त, पुं., प्रथमा विभक्तिः बहुवचनम्) रचिताः; बनाए गए हैं; have been created.
परमेष्ठिनः (सं.)	=	(परमेष्ठिन्, षष्ठी विभक्तिः, एकवचनम्) ब्रह्मणः, विधातुः, बह्मा का, विधाता का; of the creator.
परार्द्धसङ्ख्या (सं.)	=	(परार्द्धा सङ्ख्या, कर्मधारयसमासः) अन्तिमा परार्द्धनामा सङ्ख्या; गिनती में सबसे अंतिम सङ्ख्या the last number equivalent to 1,000, 000, 000, 000, 000, 00 इति
वन्दिनः (सं.)	=	(वन्दिन्., पुं., प्रथमा विभक्तिः, बहुवचनम्) स्तुतिगायकाः; वन्दना करने वाले; Panegyrists, bards, celestial singers.
विश्वेषाम् (सर्व.)	=	(विश्व, षष्ठी विभक्तिः, बहुवचनम्) सर्वेषाम्; सबका; of everyone.
उदेष्यन्तम् (वि.)	=	(उत् इ स्यतृ, द्वितीया विभक्तिः, एकवचनम्) उदेष्यमाणम्; उदय होते हुए (सूर्य) को; to the risings sun.